Part - III

Neutralism —

अनुभयवाद का इतिहास

अनुभयवाद आधुनिक सिद्धांत है। इसका स्पष्ट रूप वर्तमान युग के कुछ दार्शनिकों की रचनाओं में ही मिलता है। अर्न्स्ट मैक (Ernst Mach 1838-1916) रिचर्ड एवेनेरियस (Richard Avenarious 1843-1896), विलियम जेम्स (William James 1842-1910), ब्रट्रैंड रसेल (Bertrand Russell 1872-1970) तथा अमेरिका के कुछ नवीन वस्तुवादी विचारकों की कृतियों में इसके विभिन्न रूप पाये जाते हैं। यों तो कुछ लेखकों ने स्पीनोजा (Spinoza) और शेलिंग (Schelling F.W.J Von-1775-1854) को भी अनुभयवाद घोषित किया है किन्तु ऐसा करना उचित नही है। स्पीनोजा के विषय में यह विवादास्पद है कि वे मूल द्रव्य को सचमुच जड़, चेतन आदि अनन्त गुणों से युक्त मानते हैं या बिलकुल गुणरहित। इसलिए उन्हे अनुभयवादी कहना निर्विवाद नही है। अपितु अधिकांश विद्वानों का मत है कि वे जड़, चेतन आदि को मूल द्रव्य का यथार्थ गुण मानते हैं। इस मत के अनुसार तो निश्चय ही वे अनुभयवादी नही हैं। शेलिंग का दर्शन भी असंदिग्ध रूप से अनुभय

वादी नहीं कहा जा सकता। बल्कि पश्चिमी दर्शन के प्रमुख इतिहासकार उनकी गणना प्रत्ययवादी परम्परा के अन्तर्गत करते है। इसलिए स्पीनोजा और शेलिंग को अनुभयवाद के उदाहरण के रूप में हम नहीं देंगे। यहाँ हम उन्हीं विचारकों के मत का विवेचन करेंगे जिनका दर्शन निश्चित रूप से अनुभयवादी कहा जा सकता है।

यद्यपि अनुभयवाद का प्रवर्तक विलियम जेम्स को माना जाता है, फिर भी उनके पूर्व मैक और एवेनेरियस के विचारों में उसका आरम्भिक रूप मिलता है। मैक का कहना है कि विश्व का वही स्वरूप है जैसा वह प्रतीत होता है, प्रतीयमान जगत से अलग कोई दूसरा जगत कभी हमें ज्ञात नहीं होता। किन्तु प्रतीयमान जगत के सभी पदार्थ अपने आप में जड़ और चेतन दोनों से भिन्न हैं। विभिन्न परिस्थितियों में वे कभी जड़ और कभी चेतन के रूप में दीख पड़ते हैं। एक ही पदार्थ एक दृष्टिकोण से भौतिक है तो दूसरे से वही मानसिक या आध्यात्मिक बन जाता है।